RNI No. RAJHIN/2007/26996
ISSN 0976-7452 Raaso
Refreed Journal

रासो

अन्तर्विषयी त्रैमासिक शोध पत्रिका

वर्ष-17, अंक-3, जून जुलाई अगस्त 2024

रासो
त्रैमासिक शोध पत्रिका
2005
॥ स्वस्ति पन्थामनु चरेम॥

RNI No. RAJHIN/2007/26996
ISSN 0976-7452Raaso
Refreed Journal

रासो

इतिहास, संस्कृति, साहित्य एवं दर्शन की त्रैमासिक शोध पत्रिका

वर्ष-17 अंक - 3 जून-जुलाई-अगस्त-2024

सम्पादक
डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

निदेशक
कॉम्पिटिशन प्लस संस्थान, ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स, अजमेर (राजस्थान)

संरक्षक

* **प्रो. जे. पी. शर्मा** - पूर्व कुलपति, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)

सलाहकार मण्डल

* **प्रो. विभा उपाध्याय** - प्रोफेसर, इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)
* **नर्मदा प्रसाद उपाध्याय** - प्रसिद्ध साहित्यकार तथा संस्कृति चिंतक, इन्दौर (मध्य प्रदेश)
* **प्रो. टी.के. माथुर** - पूर्व अध्यक्ष, इतिहास विभाग महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर (राज.)
* **डॉ. रमेश अग्रवाल** - पूर्व स्थानीय सम्पादक, दैनिक भास्कर, अजमेर (राजस्थान)
* **डॉ. गौरव बिस्सा** - सहआचार्य, विभागाध्यक्ष, प्रबंध अध्ययन विभाग, राजकीय अभियांत्रिकी महाविद्यालय, बीकानेर (राज.)
* **डॉ. बीना शर्मा** - पूर्व विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, सावित्री कन्या महाविद्यालय, अजमेर
* **प्रो. शोभा आर. मिश्रा** - आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, माधव महाविद्यालय, उज्जैन
* **डॉ. वेद प्रकाश विद्यार्थी** - पूर्व सहायक निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, नई दिल्ली।

☆ उप सम्पादक
डॉ. रीता पारीक
प्राचार्य
हुकुमचन्द नोबल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

☆ प्रबन्ध सम्पादक
डॉ. मृत्युंजय शर्मा
सह-आचार्य
हुकुमचन्द नोबल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

☆ सहायक सम्पादक
डॉ. निष्काम शर्मा

☆ शब्द संयोजन
मुकेश कुमार माहेश्वरी

☆ सम्पादकीय/सचिव
व्यवस्थापकीय कार्यालय
सृजन संस्थान,
आचमन, वेद विहार,
लोहाखान, अजमेर-06
दूरभाष : 0145-2426610
e-mail : rasoajmjournal@gmail.com

☆ प्रकाशक :
पुष्पा शर्मा
सृजन संस्थान,
द्वारा आचमन पब्लिकेशन्स,
अजमेर

☆ मुद्रक :
मैसर्स आर्य प्रिन्टर्स,
केसरगंज, अजमेर

☆ कम्प्यूटराइज्ड सेटिंग :
श्रीनिवास प्रिन्टोग्राफिक्स
132, पंचवटी कॉलोनी,
अजमेर दूरभाष : 0145-2442701

सहयोग दर

* वार्षिक सदस्यता - 500 रु. (चार अंक) संस्थाओं हेतु - 600 रु. (चार अंक)
कृपया चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर श्रीमती पुष्पा शर्मा, प्रकाशक, आचमन पब्लिकेशन्स, अजमेर- 305006 के नाम भेजें।

प्रकाशक-श्रीमती पुष्पा शर्मा, 51/1509, वेद विहार, लोहाखान, अजमेर द्वारा मैसर्स सृजन संस्थान, अजमेर की ओर से प्रकाशित एवं मुद्रक-श्रीमती उषा गर्ग द्वारा मैसर्स आर्य प्रिन्टर्स, केसरगंज, अजमेर से मुद्रित।

रामचरितमानस के संदर्भ में मर्यादा पुरुषोत्तम राम का चरित्र

डॉ. सुनीता जांगिड़
विभागाध्यक्ष (शिक्षा विभाग)
हुकुमचन्द नोबल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

संत तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस भारतीय भक्ति-साहित्य की अमूल्य कृति है। तुलसीदास ने इस ग्रंथ की रचना उस काल में की थी जब देश सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक रूप से अनेक चुनौतियों से गुजर रहा था। ऐसे समय में उन्होंने भगवान राम के आदर्श जीवन को लोकमानस के सामने 'मर्यादा पुरुषोत्तम' रूप में प्रस्तुत किया। तुलसी के राम केवल विष्णु के अवतार नहीं, बल्कि परम ब्रह्म, सत्य, धर्म और आदर्श के मूर्त रूप हैं।

तुलसीदास की दृष्टि में राम पूर्ण पुरुष हैं—निराकार ब्रह्म भी और साकार ईश्वर भी। वे चरित्र, कर्तव्य, करुणा, सत्य, त्याग और धर्म के सर्वोच्च मानदंड हैं। तुलसी कहते हैं– 'राम सों बड़ो है कौन, मोसो कौन छोटो?' यह वचन राम के प्रति उनकी पूर्ण समर्पण-भावना दर्शाता है। राम के चरित्र में ईश्वरीय तेज के साथ मानवीय मधुरता भी है; वे पिता के वचन के लिए राज्य त्यागने वाले पुत्र हैं, सीता के प्रति समर्पित पति, प्रजा के हितैषी राजा, और धर्म की रक्षा के लिए संघर्षरत वीर।

राम का जीवन अत्यंत संयम, मर्यादा, कर्तव्यपालन और न्यायप्रियता का आदर्श स्थापित करता है। वे हर परिस्थिति में संतुलित, धैर्यवान और सत्यनिष्ठ दिखाई देते हैं। तुलसीदास ने उन्हें मानवता के आदर्श, जीवन के मार्गदर्शक और समाज को संगठन देने वाले चरित्र के रूप में चित्रित किया है।

इस प्रकार रामचरितमानस में राम का स्वरूप केवल धार्मिक आस्था का विषय नहीं, बल्कि नैतिकता, आदर्शवाद और लोकमंगल का प्रकाश स्तंभ बनकर उभरता है—जो भारतीय संस्कृति में 'मर्यादा पुरुषोत्तम' की सर्वोच्च परिभाषा है।

तुलसीदास ने रामचरितमानस में राम के निर्गुण और सगुण—दोनों रूपों का अत्यंत सुंदर समन्वय प्रस्तुत किया है। उन्होंने स्पष्ट किया कि ईश्वर के ये दोनों रूप अलग नहीं हैं, बल्कि एक ही ब्रह्म की दो अभिव्यक्तियाँ हैं—

'सगुनहि अगुनहि नहि कछु भेदा'

'अगुन सगुन दुइ ब्रह्म स्वरूपा'

इन पंक्तियों के माध्यम से तुलसी यह बताते हैं कि राम ही अव्यक्त (निर्गुण) भी हैं और व्यक्त (सगुण) भी। वे गुणातीत भी हैं और गुणसम्पन्न भी।

शोध-पत्र में उल्लिखित सन्दर्भ एवं विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी है, सम्पादक नहीं।

तुलसीदास की भक्ति-साधना में राम का यह पूर्ण स्वरूप विभिन्न जीवन-स्थितियों में लोकविश्वास के आदर्श मानकों पर खरा उतरता है—वे पुत्र, शिष्य, पति, राजा, भाई और पिता—हर रूप में मर्यादा का सर्वोत्तम उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। यही व्यापकता और लोकसंग्रह शक्ति 'रामचरितमानस' को कालजयी बनाती है।

तुलसीदास ने लोकजीवन की आवश्यकताओं, भावनाओं और विश्वासों को सुसंस्कृत रूप देकर राम को सत्य, सेवा, परोपकार, करुणा, प्रेम, नीतिमत्ता और मानवता के मूल्यात्मक आदर्शों का केन्द्र बना दिया। उन्होंने राम के चरित्र को केवल दिव्यता तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे जीवंत, स्पंदित और लोकानुरूप बनाकर प्रस्तुत किया। इसी कारण, रामचरितमानस जनमानस की प्राणग्रंथि से जुड़ा हुआ ग्रंथ है।

फादर कामिल बुल्के ने भी इसकी महत्ता स्वीकार करते हुए कहा— ''रामचरितमानस सबसे अधिक लोकप्रिय प्रमाणित कृति है। हिंदी के राम साहित्य में तुलसीदास का एक प्रकार से एकाधिकार है। मैं प्रत्येक जन्म में तुलसी की सभी रचनाएँ बार-बार पढ़ूँ।''

तुलसीदास जी की रचना रामचरितमानस का स्थान केवल हिंदी साहित्य में ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व के साहित्य में अनोखा है। ऐसा सुंदर, सम्पूर्ण और सभी काव्य-गुणों से भरपूर ग्रंथ किसी भी भाषा में दूसरा नहीं मिलता। यह काव्य सभी रसों का अनुभव कराता है और सरल, रोचक तथा प्रभावशाली भाषा में लिखा गया है। इसमें आदर्श गृहस्थ जीवन, राजा का कर्तव्य, परिवारिक मर्यादा, पतिव्रत धर्म, भाईचारे का आदर्श, तथा भक्ति, ज्ञान, कर्म, त्याग, वैराग्य और सदाचार—इन सभी मूल्यों की सीख मिलती है। यह ग्रंथ स्त्री-पुरुष, बच्चे, युवा, बुजुर्ग—हर वर्ग के लिए समान रूप से उपयोगी है। भगवान राम की सगुण-साकार लीला, उनके गुण, रहस्य, प्रेम और भक्ति का ऐसा सुंदर चित्रण दुनिया की किसी भी भाषा में कठिन है।

तुलसीदास न केवल अपने समय के महान कवि थे, बल्कि विश्व साहित्य में 'संपूर्णता के कवि' माने जाते हैं। आदिकवि वाल्मीकि की रामायण और अन्य सभी पूर्व रामकथाओं में जो अर्थ और गहराई थी, तुलसी ने उसे अपने ग्रंथ में और अधिक पूर्णता के साथ व्यक्त किया। 'रामचरितमानस' मानव जीवन के हर पहलू—धार्मिक, सामाजिक, पारिवारिक और आध्यात्मिक—से गहराई से जुड़ी हुई है।

डॉ. रामकुमार वर्मा ने ठीक ही लिखा है— ''तुलसी की प्रतिभा और काव्यकला इतनी ऊँची है कि उनके बाद किसी भी कवि की रामकथा उनसे तुलना नहीं कर सकी। तुलसी भारतीयता के प्रतीक हैं। उन्होंने भारतीय धर्म, दर्शन और साहित्य को जितना ऊँचा स्थान दिया, वह किसी और लेखक के बस की बात नहीं थी।''

रामचरितमानस के पाँचों कांडों में विभिन्न जनजातियों का उल्लेख मिलता है। बालकांड में जनजातीय जीवन से जुड़े चार प्रमुख प्रसंग—मुनि वाल्मीकि और भक्त शबरी—विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। ग्रंथ के प्रारंभ में ही मंगलाचरण के चौथे श्लोक में तुलसीदास ने आदिकवि वाल्मीकि को नमन किया है।

अयोध्याकांड की मुख्य घटनाओं में श्रीराम का वन-गमन और उसके बाद भरत का चित्रकूट जाना शामिल है। इन प्रसंगों में तुलसीदास ने निषादराज को जो सम्मान और आदर दिया है, वह विश्व-साहित्य में भी दुर्लभ है। इसी प्रकार केवट-प्रसंग भी तुलसीदास की मौलिक कल्पना से समृद्ध है। यह प्रसंग परंपरागत रामकथा से थोड़ा भिन्न होते हुए भी अत्यंत भावपूर्ण है और यह दर्शाता है कि तुलसीदास को जनजातीय

समाज से गहरा प्रेम था। साथ ही यह श्रीराम जो इस महाकाव्य के नायक हैं, के विशाल हृदय और सभी वर्गों के प्रति उनकी समान दृष्टि को भी प्रकट करता है।

रामचरितमानस के निषाद, केवट और शबरी ये सभी ऐसे पात्र हैं जो ईश्वर की सहज अनुकंपा प्राप्त करने में पूर्णतः सफल माने जाते हैं। तुलसीदास ने इन्हें अत्यंत सम्मानजनक और हृदयस्पर्शी रूप में चित्रित किया है।

तुलसीदास के साहित्य में अनेक शब्द ऐसे मिलते हैं जो जनजातीय समुदायों को दर्शाते हैं, जैसे— रामसखा, निषाद, निषादराज, केवट, कोल, कोलन्हि, किरात, भिल्लिनी, सुनारी, सबर, निषाद-कहार, बनवासी, खस, सखन्ह, बधिक, मुनि, गोंड, सबरि आदि। ये सभी शब्द लोकजीवन और वनवासी समाज की वास्तविकता को अभिव्यक्त करते हैं।

तुलसीदास दास्य-भाव के भक्त थे। दास्य-भक्ति में भक्त स्वयं को प्रभु का सेवक या दास मानता है। ऐसा इसलिए कि उसके मन में जरा भी अहंकार न रहे और वह पूरी आत्मसमर्पण भावना के साथ ईश्वर की भक्ति कर सके।

जनजातीय समाज की महिलाओं के लिए यह अत्यंत गौरव की बात है कि इसी समुदाय की भील साधिका शबरी ने ऐसी आध्यात्मिक ऊँचाई प्राप्त की, जो साधारण वर्ग के तपस्वियों और योगियों से भी अधिक मानी गई। घने जंगलों में रहना स्वयं कठिन है, और वहाँ रहना विशेष रूप से महिलाओं के लिए और भी चुनौतीपूर्ण होता है।

इसी संदर्भ में जब सीता जी श्रीराम के साथ वन जाने का आग्रह करती हैं, तो माता कौशल्या उन्हें समझाती हैं कि वन में रहना साधारण स्त्रियों के बस की बात नहीं, विशेष रूप से उन स्त्रियों के लिए जो राजपरिवार में पली-बढ़ी हों। वहीं वन में रहने वाली कोल और किरात कन्याएँ वहाँ की कठिन परिस्थितियों से परिचित होती हैं। वे शहरों या महलों जैसी सुविधाओं से अनभिज्ञ होती हैं, इसलिए वन का जीवन उनके लिए उतना कष्टदायक नहीं लगता। तुलसीदास ने इसका सुंदर चित्रण इन पंक्तियों में किया है—

'बनहित कोल किरात किसोरी,
रचीं बिरंचि विषय सुख भोरी।
पाहन कृमि जिमि कठिन सुभाऊ,
तिन्हहि कलेसु न कानन काऊ।'

अर्थ यह कि कोल-किरात कन्याएँ संसार के सुख-विलास से दूर रहती हैं, जैसे पत्थर पर रहने वाले कीड़े सख्त वातावरण से प्रभावित नहीं होते—उसी प्रकार उन्हें वन का कष्ट नहीं लगता।

तुलसी-साहित्य में राजनीतिक विचारों का भी स्वाभाविक समावेश मिलता है। तुलसीदास द्वारा प्रतिपादित रामराज्य एक आदर्श राजतंत्रीय व्यवस्था थी, परंतु उसके भीतर स्वस्थ और न्यायपूर्ण जनतंत्र के अनेक सूत्र भी निहित थे। यह शासन-व्यवस्था धर्म, नीति और जनकल्याण पर आधारित थी, जो समाज के प्रत्येक वर्ग को समान स्थान देती है।

तुलसीदास के साहित्य में जनजातीय समाज के राजा के रूप में निषादराज गुह का अत्यंत सम्मानजनक

उल्लेख मिलता है। गुह निषादों (केवटों/घटवारों) का राजा था। रामचरितमानस में तुलसीदास ने उसे 'निषादनाथ' और 'निषादपति' जैसे सम्मानसूचक नामों से संबोधित किया है, जिससे उसकी गरिमा और प्रभुता का पता चलता है—

'तब निषादपति उर अनुमाना।'

रामचरितमानस में मर्यादा पुरुषोत्तम राम के जीवन और व्यवहार की वे सारी मर्यादाएँ वर्णित हैं, जो सामान्य जन के लिए नीति और आचरण के आदर्श रूप में स्वीकार्य हैं। तुलसीदास न केवल भक्तिकाल के महाकवि थे, बल्कि वे अपने समय के युगप्रवर्तक और युगद्रष्टा भी थे।

उनके व्यक्तित्व और काव्य की महत्ता को अभिव्यक्त करते हुए कहा गया है—

तुलसीदास अपने समय का वरदान थे। उनका आगमन ऐसे काल में हुआ, जब युग-चेतना उनकी प्रतीक्षा कर रही थी। मानवता उनके हाथों अपनी नई पहचान पाना चाहती थी। दर्शन की गहराई उन्हें अपना माध्यम बनाना चाहती थी। कला उनकी स्वर-लहरियों में अभिव्यक्ति पाना चाहती थी। भाषा उनकी वाणी से समृद्ध होने के लिए उत्सुक थी। संस्कृति उनके स्पर्श से पूर्णता चाहती थी। धार्मिकता उनके आगमन का इंतजार कर रही थी।

इसी प्रकार की प्रतीक्षा और आकांक्षा में डूबे समय में तुलसीदास का जन्म हुआ। वे अपने युग की चेतना, विचारधारा और वातावरण के श्रेष्ठ गुणों का जीवंत और साकार रूप थे।

तुलसीदास जी के चरित्र-नायक श्रीराम हैं, इसलिए रामचरितमानस में उन्होंने श्रीराम के जीवन की पूर्णता और आदर्श रूप को विस्तार से प्रस्तुत किया है। श्रीराम की नीति—जो मर्यादा, आदर्श, सदाचार, दीन-हित, गरीबों पर कृपा और लोक-रक्षा जैसे गुणों से भरी है—इस ग्रंथ में अत्यंत सुंदर रूप में उभरती है। श्रीराम का सर्वव्यापक और संपूर्ण व्यक्तित्व उनके सात्विक कर्मों और आचरण के माध्यम से प्रकट होता है।

तुलसीदास जी ने मानव जीवन की उन्नति, विकास, समृद्धि, स्वास्थ्य और जीवन के अन्य सभी सकारात्मक पहलुओं पर विचार करते हुए ऐसा कोई पक्ष नहीं छोड़ा जो उन्होंने वर्णित न किया हो। श्रीराम का मर्यादित आचरण मानव समाज के लिए अनादिकाल तक आदर्श बना रहेगा। श्रीराम का शील और चरित्र मानवता को सदैव प्रेरणा देता रहेगा।

भारतीय जनमानस के लिए तुलसीदास ने श्रीराम के रूप में जिस लोकतत्त्व को व्यक्त किया, वह अद्भुत समन्वय का उदाहरण है। भारतीय जीवन-दर्शन को समझने के लिए तुलसीदास सबसे अधिक प्रासंगिक माने जाते हैं। समय-समय पर संतों, ऋषियों और महापुरुषों द्वारा जो जीवन-मूल्य स्थापित किए गए, वे सभी तुलसी-साहित्य में प्रभावी रूप से उपस्थित हैं। तुलसीदास जीवन की संपूर्णता के कवि हैं। उनका साहित्य जीवन के सुख-दुख, संघर्ष, आदर्श और संभावनाओं का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करता है।

उनका साहित्य हर युग के लिए एक निर्मल दर्पण जैसा माना जाता है—ऐसा दर्पण जो जीवन को शुद्ध, स्पष्ट, मर्यादित, सकारात्मक और मानवीय बनाने की प्रेरणा देता है। श्रीराम के आदर्श आचरण को मानक बनाकर तुलसीदास ने समाज में संतुलित, सुंदर और सार्थक जीवन जीने का मार्ग प्रशस्त किया है।

कुल मिलाकर, जीवन की समग्रता, उसकी युगानुकूलता और समाजोपयोगिता की दृष्टि से तुलसीदास का काव्य पूर्ण, संतुलित और अत्यंत सार्थक है।

तुलसीदास ने श्रीराम के चरित्र को आदर्श और यथार्थ—दोनों धरातलों पर बड़ी सूक्ष्मता से उकेरा है। रामचरितमानस में बाल्यावस्था से लेकर जीवन-पर्यन्त श्रीराम के प्रत्येक व्यवहार को इस प्रकार चित्रित किया गया है कि वह सामान्य मनुष्य के लिए भी अनुकरणीय बन उठता है। सार्वजनिक जीवन के आदर्श हों या सामाजिक व्यवहार की मर्यादाएँ—हर क्षेत्र में श्रीराम का व्यक्तित्व अत्यंत विलक्षण दिखाई देता है।

श्रीराम ने समाज के प्रत्येक वर्ग को सम्मान दिया और सबके साथ मर्यादित, करुणामय और समान भाव से व्यवहार किया। निषादराज गुह, गिद्धराज जटायु, तपस्विनी शबरी, वानर-भालू समुदाय, मंदोदरी, त्रिजटा सभी का आचरण इस बात का प्रमाण है कि वे मानवता और समानता की सर्वोच्च भावना के प्रतीक थे। तुलसीदास ने इन घटनाओं के माध्यम से श्रीराम को लोक-कल्याणकारी आदर्श के रूप में प्रतिष्ठित किया है।

महाकवि तुलसी के सामने भारतीय संस्कृति का गहन और उदात्त चिंतन विद्यमान था। इसी आधार पर उन्होंने मध्यकालीन युग के विषम वातावरण में भी श्रीराम को एक संवेदनशील, करुणामय और मानवधर्मी नायक के रूप में प्रस्तुत किया। उनका राम न केवल धर्म का प्रतिनिधि है, बल्कि मानव-मूल्यों का सजीव स्वरूप भी है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने तुलसीदास की वाणी की हृदयग्राही शक्ति को रेखांकित करते हुए लिखा है कि—

''गोस्वामी तुलसीदास के शब्दों में हृदय को आंदोलित करने की जो क्षमता है, वह दुर्लभ है। उनकी प्रेरणा से समाज सौंदर्य का आस्वाद, आदर्शों की प्रतिष्ठा, विपत्ति में धैर्य, कठिनाई में उत्साह और जीवन-मूल्यों का बोध प्राप्त करता है।''

तुलसीदास का स्वयं यह मत है कि—

कै तोहि लागहिं राम प्रिय कै तू हरिप्रिय होइ,
दुइ महँ तो कहँ जो रुचै, कीजै तुलसी सोइ।।

अर्थात् जो सत्य और सज्जनता के मार्ग पर चलता है, संतों और गुरुजनों का आदर करता है, संतोषी है—वह चाहे राम-नाम का उच्चारण न करे, फिर भी राम का प्रिय है।

यद्यपि गोस्वामी तुलसीदास ने *रामचरितमानस* की रचना 'स्वान्तः सुखाय' कही है, परंतु उनके ग्रंथ का वास्तविक उद्देश्य लोकहित और कल्याण ही है—जैसा कि वे स्वयं लिखते हैं—

'मंगलकरनि, कलिमल हरनि तुलसी कथा रघुनाथ की।'

अर्थात् रामकथा का मूल प्रयोजन समाज के दुखों का नाश और जनमानस में मंगलभाव का संचार करना है।

राम की मर्यादा का सर्वोच्च रूप उस प्रसंग में दिखाई देता है जब रावण-वध के पश्चात् वे कहते हैं—

'मरणान्तानि वैराणि।'

अर्थात् 'शत्रुता जीवन के साथ ही समाप्त हो जाती है। अब रावण भी मेरे लिए वैसा ही है जैसा तुम्हारे लिए।' यह वाक्य राम की क्षमा, उदारता और कल्याणकारी दृष्टि का अद्वितीय उदाहरण है।

भारतीय सांस्कृतिक परंपरा का निर्वाह करते हुए तुलसीदास ने रामकथा में मर्यादाओं को ऐसे प्रतिष्ठित किया है कि वह समाज के लिए मानो एक दिशासूचक यंत्र बन जाती है। राम का आदर्श आचरण भविष्य के लिए भी मार्गदर्शक सिद्ध होता है।

'थोरे मँह जानिहहिं सयानें' अर्थात थोड़े संकेत से ही बुद्धिमान समस्त आशय समझ लेते हैं यह कथन रामचरितमानस की मर्यादा-दृष्टि की सारगर्भित व्याख्या जैसा प्रतीत होता है।

राम की मर्यादा का व्यापक स्वरूप :

(1) मर्यादाओं की अवधारणा :- शास्त्रों में कहा गया है– 'मर्यादोपेतोऽयं लोक: ' –अर्थात सम्पूर्ण संसार अपनी-अपनी मर्यादाओं में स्थित है। मर्यादा वह शक्ति है जो व्यक्ति को नियत सीमाओं में रहते हुए कर्तव्य का पालन करने की दिशा देती है। तुलसीदास इन मर्यादाओं को दो भागों में देखते हैं– आध्यात्मिक और सामाजिक।

(2) राम–मर्यादा पुरुषोत्तम :- राम का संपूर्ण जीवन उन मर्यादाओं का जीवंत स्वरूप है जो एक आदर्श, लोकप्रिय और लोकहितकारी राजा के लिए अनिवार्य मानी जाती हैं। उनका अवतरण ही मर्यादाओं की प्रतिष्ठा और पुनर्स्थापना के लिए हुआ था।

(3) राजधर्म के नए मानक :- सामान्य राजा जहां राज्य के नियमों को बल और न्याय से लागू करता है, वहीं राम की मर्यादाएँ मानवीय मूल्यों पर आधारित थीं। इसी कारण वे राज्याभिषेक के स्थान पर वनवास को सहज भाव से स्वीकार करते हैं। उनका कथन– 'राज्य और वनवास में मेरे लिए कोई भेद नहीं' मर्यादा की इस उच्च दृष्टि को प्रकट करता है।

(4) राजनीति में धर्म का समन्वय :- कैकेयी द्वारा वरदान माँगने और राम को वन भेजने की स्थिति में भी राम ने न धार्मिक सिद्धांतों का उल्लंघन किया, न पिता की आज्ञा का विरोध। एक आज्ञाकारी पुत्र और धर्मनिष्ठ पुरुष के रूप में उनका यह आचरण मर्यादा का सर्वोत्तम उदाहरण है।

(5) भ्रातृ-प्रेम की मर्यादा :- राम कभी भी लक्ष्मण से भरत के विषय में कोई कटु वचन सुनना नहीं चाहते। वे स्पष्ट कहते हैं कि 'भरत के लिए अप्रेम, वस्तुत: मेरे लिए अप्रेम है।' यह कथन उनके निष्कलुष हृदय और प्रेम की मर्यादा का द्योतक है।

(6) सीता-विसर्जन–लोकमत की मर्यादा :- राम के चरित्र की सबसे कठिन और गहन मर्यादा सीता को पुन: वनवास भेजने के प्रसंग में दिखाई देती है। यहाँ उनका निर्णय व्यक्तिगत सुख पर लोकमत को श्रेष्ठ मानने का प्रमाण है। तुलसीदास इस प्रसंग में राम को एक ऐसे राजा के रूप में प्रस्तुत करते हैं जो स्वयं के दुख से ऊपर उठकर प्रजा के विश्वास को प्राथमिकता देता है।

सच्चा राजा वही है जो ईश्वरवादी हो, धर्मनिष्ठ तथा शास्त्रानुगामी हो, अनैतिक और अकर्तव्य कर्मों से दूर रहे, और प्रजा को अपनी संतान की भाँति समझकर उसका हित साधे।

राम इन सभी गुणों के धनी थे। इसलिए वे 'मर्यादा पुरुषोत्तम' कहलाए, राजा भी, मार्गदर्शक भी, और आदर्श मानव भी।

तुलसीदासजी ने श्रीराम के आदर्श-चरित्र को इस प्रकार चित्रित किया है कि वह मर्यादा, सौंदर्य, करुणा और औदार्य का पूर्ण रूप बनकर हमारे सामने उपस्थित होता है। उनके कथनानुसार-

होहि प्रेम बन लोग इमि राम जहां जहं जाहिं।।

बरनत छवि जहं तहं सब लोगू, अवसि देखिये देखन जोगू।

अस को जीवजंतु जग माहीं, जेहि, रघुनाथ प्राणप्रिय नाहीं।

खग मृग मगन देखि छवि होहीं, लिये चोरि चित राम बटोहीं।

जिन्हहिं निरखि मग सांपिनि बीछी, तजहिं विषम विष तापस तीछी।

राम जहाँ-जहाँ जाते हैं, वहाँ के वातावरण में स्वाभाविक रूप से प्रेम का प्रस्फुटन हो उठता है। उनकी छवि ऐसी है कि उसे देखते ही प्रत्येक व्यक्ति और प्राणी आकर्षित हो जाता है। तुलसीदास कहते हैं कि श्रीराम का रूप इतना मनोहर, दिव्य और देखने योग्य है कि जो भी उसे निहार लेता है, उसका मन उसी में रम जाता है। यही कारण है कि वन में विचरण करते हुए पक्षी और मृग भी उनके सौंदर्य में आकृष्ट होकर मग्न हो जाते हैं। यहाँ तक कि विषधर सर्प भी श्रीराम के दर्शन मात्र से अपने विष को त्याग देते हैं और शांत हो जाते हैं। कवि इन प्रसंगों के माध्यम से यह सिद्ध करते हैं कि राम केवल मानवों के प्रिय नहीं, बल्कि समस्त जीव-जंतुओं और प्रकृति के भी प्रिय हैं।

श्रीराम की छवि में आदर्श प्रकृति और आदर्श व्यवहार का अद्भुतत संगम मिलता है। उनके शील में अपार उदारता, करुणा और शरणागत की रक्षा करने का दृढ़ भाव समाहित है।

'अरिहुक अनभल कीन्ह न रामा।' अथवा

'मैं जानहुं निज नाथ सुभाऊ। अपराधिहु पर कोह न काऊ।'

'जन कहं कछु अदेय नहिं मोरे, अस विस्वास तजहु जनि भोरे।।'

'जो सम्पत्ति सिव रावणहिं दीन्हि दिये दसमाथ,

सोइ सम्पदा विभीषणहिं, सकुचि दीन्हि रघुनाथ।'

तुलसीदास जी यह दिखाते हैं कि राम कभी किसी का अनिष्ट नहीं सोचते, चाहे वह उनका शत्रु ही क्यों न हो। वे अपराधियों पर भी क्रोध नहीं करते, क्योंकि उनके स्वभाव में कठोरता का स्थान ही नहीं है। उनका यह कहना कि संसार में उनके लिए कोई ऐसा नहीं है जिसे वे कुछ देने में असमर्थ हों, उनकी निष्कपट उदारता को प्रत्यक्ष करता है। इसी उदारता का एक अद्भुत उदाहरण यह है कि जो सम्पत्ति उन्होंने रावण को दी थी, वही विभीषण को भी बिना किसी संकोच के सौंप देते हैं।

उनकी करुणा भी उतनी ही अनंत और विराट है।

'रहति न प्रभु चित चूक किये को,

करत सुरति सत बार हिये को।।'

'अति कृपालु रघुनायक, सदा दीन पर नेह।'

'कोमल चित अति दीनदयाला, कारन बिनु रघुनाथ कृपाला।।'

तुलसीदास बताते हैं कि राम किसी की भूल को मन में नहीं रखते; वे दीन-दु:खी जनों पर सदा दया करने वाले, उनके कष्ट मिटाने वाले, और बिना किसी कारण भी कृपा करने वाले प्रभु हैं। उनका हृदय अत्यंत कोमल, दीन-दयालु और संवेदनशील है। राम का यह करुणामय रूप केवल भक्तों को ही नहीं, बल्कि समूचे समाज को मनुष्यत्व का सही मार्ग दिखाता है।

इस प्रकार तुलसीदासजी ने राम के चरित्र को मर्यादा और आदर्शों से पूर्ण बनाकर प्रस्तुत किया है। उनके राम केवल एक राजा नहीं, बल्कि ऐसे आदर्श नायक हैं जिनकी छवि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अनुकरणीय बन जाती है। राम का चरित्र मर्यादा, प्रेम, शील, करुणा और उदारता के माध्यम से मानव समाज के लिए वह आदर्श प्रस्तुत करता है, जो युगों-युगों तक लोक को प्रेरणा देता रहेगा।

मर्यादा-पुरुषोत्तम राम के कारुण्य और शील को तुलसीदास ने अद्वितीय रूप में चित्रित किया है। तुलसीदास जिन आदर्श मर्यादाओं की कल्पना मध्यकालीन भारत में करते थे, वे सभी राम के व्यक्तित्व में साकार हो उठती हैं। उनके अनुसार राम न केवल नीति, धर्म और विनय के प्रतीक हैं, बल्कि कोमल हृदय, दया, शरणागत-पालन और औदार्य के सर्वोच्च मानक भी हैं।

प्रभु तरुतर कपि डार पर, ते किय आपु समान।

तुलसी कतहुं न राम से, साहिब सील निधान।।

तुलसीदास राम के शील को इतना महान बताते हैं कि वे स्वयं स्वीकार करते हैं कि दुनिया में राम जैसा शील-निधान दूसरा नहीं। उनके जीवन के प्रत्येक प्रसंग—राज्य-त्याग, पिता की आज्ञा-पालन, भ्रातृ-प्रेम, प्रजा-वत्सलता—सभी में यह आदर्श शील झलकता है। इसी कारण उनका परिवार एक आदर्श परिवार और उनका राज्य एक आदर्श राज्य के रूप में प्रकट होता है।

डॉ. जे.एम. मेक्फो के शब्दों में, तुलसीदास की रचना में मनुष्य-रूप भगवान का सर्वोच्च, सच्चा और प्रेरणादायक आध्यात्मिक स्वरूप मिलता है, जिसका भारतीय साहित्य में कोई दूसरा समान नहीं।

शबरी की नवधा भक्ति के प्रसंग में तुलसीदास जी स्पष्ट करते हैं कि रामभक्ति का सार केवल भावुकता नहीं, बल्कि जनकल्याण, मर्यादा और विवेक-संतुलन है। शबरी के प्रश्न—राम को कैसे प्रिय बनें और स्वयं प्रभु के प्रिय कैसे हों, का उत्तर भी इसी मर्यादा-चिंतन में निहित है। तुलसीदास संकेत करते हैं कि भक्त और भगवान, दोनों को जो मार्ग सुगम और कल्याणकारी लगे, वही आचरण योग्य है।

इसी भाव को आगे बढ़ाते हुए तुलसीदास रामभक्ति की मर्यादा को स्पष्ट करते हैं कि प्रेम अवश्य हो, पर वह नीति-विवेक से युक्त हो। रामभक्ति का आदर्श रूप वही है जिसमें मन की आसक्ति पर विजय हो और धर्म-संगत आचरण बना रहे। इसी कारण वे कहते हैं कि संतों के मत में यही सच्ची भक्ति की रीति है—राम के प्रति प्रीति और जीवन में नीति-पथ का पालन।

तुलसीदास जी ने श्रीराम की मर्यादाओं को केवल धार्मिक या आध्यात्मिक आदर्श के रूप में ही नहीं, बल्कि व्यावहारिक और सामाजिक जीवन में उपयोगी सिद्धांतों के रूप में भी प्रस्तुत किया है। उनके

अनुसार ऐसा राजा कभी भी उचित नहीं माना जा सकता जिसकी प्रजा दुखी हो, क्योंकि वह प्रत्यक्ष रूप से पाप का भागी है। इसी प्रकार वे सलाह देते हैं कि मनुष्य उन पाँच मतों (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष और लोक-कल्याण) में जो सर्वोत्तम लगे, उसे अपनाकर हर्षपूर्वक राम का तिलक करें—अर्थात् अपने जीवन को मर्यादा से प्रकाशित करें।

रामराज्य के आदर्श का वर्णन करते हुए तुलसीदास बताते हैं कि राजा वही है जो अपने परिवार और प्रजा के हित का ध्यान रखे, जिसके पास विवेक, विराग, सच्चा मंत्री, नियमनिष्ठ सैनिक, सुहावन राज्य, शांति, सुबुद्धि और सुशील रानी हो। ऐसा राज्य सर्वाङ्ग-संपन्न और सौभाग्यशाली बनता है।

तुलसीदास आगे कहते हैं कि राजा को अपने मुख जैसा होना चाहिए—जो शरीर के सभी अंगों का समान रूप से पोषण करता है। इसी प्रकार राजा का कर्तव्य है कि वह विवेकपूर्वक सभी प्रजाजनों का पालन-पोषण करे। उनके अनुसार सच्चा शासन वही है जिसमें धर्म ही आधार हो, और जिसमें राजा मन में बसे हुए संकल्पों की तरह समग्र राज्य का कल्याण करने वाला हो।

तुलसीदास जी ने श्रीराम की मर्यादाओं को इस प्रकार व्याख्यायित किया कि वे सर्वसाधारण के लिए न केवल सुगम बनीं, बल्कि जीवन को उत्कृष्ट और सार्थक बनाने की प्रेरणा भी देती रहीं। इन्हीं मर्यादाओं ने मध्यकालीन समाज को नई स्फूर्ति दी और राष्ट्रभावना को सर्वोपरि मानने की चेतना जागृत की। श्रीराम तुलसीदास के यहाँ सात्त्विक, राजसिक और तामसिक तीनों प्रवृत्तियों के मध्य आदर्श संतुलन के प्रतीक बनकर उभरते हैं।

गोस्वामी तुलसीदास ने मानव-मन की गहराइयों को समझते हुए श्रीराम को धीर, गंभीर और सुशील नायक के रूप में प्रस्तुत किया—ऐसा नायक जो अनंत शक्ति से युक्त होकर भी सामान्य जन के बीच पूर्ण रूप से व्यवहारिक, सहज और विनम्र दिखाई देता है। वे अलौकिक हैं, फिर भी अपने आचरण से लोक में आचरणीय मर्यादाओं को स्थापित करते हैं। तुलसीदास के शब्दों में—

'जाके प्रिय न राम बैदेही, सो नर तजिय कोटि बैरी सम... ' इस कथन में धर्म, आस्था और आदर्श का गहन निचोड़ मिलता है।

राम की मर्यादाओं में लौकिक उन्नति (अभ्युदय) और आध्यात्मिक कल्याण (निःश्रेयस) दोनों का अद्भुत मेल दिखाई देता है। यही कारण है कि रामचरितमानस लोकजीवन की अनुभूतियों से जुड़ा हुआ ग्रंथ बन गया।

विभीषण प्रकरण में तुलसीदास की चरित्र-निर्माण कुशलता स्पष्ट नजर आती है। जब रावण ने क्रोध में आकर विभीषण को लात मारकर निकाल दिया, तब भी विभीषण क्रोध नहीं करते—

'तुम पितु सरिस भलेहिं मोहि मारा, राम भजे हित नाथ तुम्हारा।'

यदि कवि यहाँ थोड़ी-सी भी असावधानी बरतते और विभीषण को क्रोधावेश में दिखा देते, तो उनका साधु-स्वभाव, राम में उनकी निष्ठा और उनके चरित्र की समग्र छवि खंडित हो जाती। तुलसीदास ने इस सूक्ष्मता के साथ विभीषण को संयमित और धर्मनिष्ठ दिखाया कि उनका चरित्र आदर्श 'साधु-स्वभाव' का उत्कृष्ट उदाहरण बन गया।

तुलसीदास जी ने परशुराम-प्रसंग में राम के विनय, शील और मर्यादा का जो आदर्श प्रस्तुत किया

है, वह वास्तव में अनुपम है। परशुराम के प्रचंड क्रोध के सामने भी राम विनम्रता और नम्र वाणी से उन्हें शांत करते हैं—

'छमहु चूक अनजानत केरी...' इन शब्दों के माध्यम से तुलसीदास दिखाते हैं कि राम का शील उनकी वास्तविक शक्ति है।

रामचरितमानस में राम का प्रत्येक संवाद—पिता, माता, गुरु, भाई, सेवक, मंत्री, मित्र, निषादराज गुह, केवट, शबरी जैसे किसी भी पात्र से—उच्चतम मर्यादाओं से ओतप्रोत दिखाई देता है। राम का आचरण इस बात को प्रमाणित करता है कि नीति, भक्ति, शील और मर्यादा एक-दूसरे से अलग नहीं, बल्कि परस्पर पूरक हैं। तुलसीदास स्वयं कहते हैं—

'प्रीति राम सों, नीति पथ चलिय...' अर्थात राम की भक्ति बिना नीति के संभव नहीं।

राम के शील का विस्तृत चित्रण तुलसीदास ने बाल्यावस्था से लेकर वनवास और राज्यारोहण तक हर प्रसंग में किया है। उनका स्वभाव—दया, विनय, क्षमा, करुणा, सरलता और कृतज्ञता—सब कुछ उनके आचरण में सहज रूप से विद्यमान है। चाहे वे सीता के सौम्य वर्णन से किसी का मन द्रवित कर दें, बालकों की तरह छोटे भाई के साथ खेलें, अहंकारी भृगुनाथ के अपराध को क्षमा करें, या निर्बल शरणागत को अपनाएँ—राम का व्यवहार हर क्षण समान रूप से सुशील और उदात्त रहता है।

विभीषण, सुग्रीव और अन्य असहायों को अपनाने में वे कृतज्ञता और करुणा की पराकाष्ठा तक पहुँच जाते हैं। भरत की सभा में उनका सम्मान भी उसी सुशीलता की निरंतरता है। यही कारण है कि तुलसीदास कहते हैं कि राम के शील और शक्ति का ऐसा दिव्य संयोग अन्यत्र दुर्लभ है।

राम की यह मर्यादा मात्र किसी अवसर विशेष की प्रतिक्रिया नहीं, बल्कि उनके स्वभाव का मूल स्वरूप है। इसलिए तुलसीदास इसे 'सिसुपन' से लेकर अंत तक निरंतर दिखाते हैं। राम की इसी सहज, सरल, औदार्यपूर्ण और करुणामय छवि पर जो मोहित होता है, वही राम के प्रति पूर्ण रूप से आकृष्ट हो पाता है।

पारम्परिक दृष्टि से श्रीराम का चरित्र पूर्णत: शील, मर्यादा और आदर्श आचरण से भरा हुआ है। तुलसीदास जी ने राम को ऐसे मानव-आदर्श के रूप में चित्रित किया है, जिनकी मर्यादा केवल राजपरिवार या कुल-परंपरा तक सीमित नहीं, बल्कि सामान्य जन और वन्यजीवन में रहने वाले समुदायों के लिए भी समान रूप से मार्गदर्शक बन जाती है।

वनवास के प्रसंगों में राम का आचरण विशेष रूप से उनकी उदारता और सामाजिक समानता के भाव को उजागर करता है। वे वन में रहने वाले निषाद, भील, शबरी और अन्य जनजातीय लोगों को न केवल सम्मान देते हैं, बल्कि हृदय की पवित्रता के साथ उन्हें गले लगाते हैं। तुलसीदास के अनुसार—राम उनके साथ निर्विकार भाव से बैठकर वार्ता करते हैं; न उनकी जीवनशैली में हस्तक्षेप करते हैं, न उनकी सांस्कृतिक विशिष्टताओं को तुच्छ मानते हैं। यह उनके चरित्र की वह ऊँचाई है, जहाँ मर्यादा, प्रेम और समानता एक साथ मिलकर एक व्यापक मानवीय दृष्टि का निर्माण करते हैं।

तुलसीदास जी के शब्द 'सोइ करु जेहिं तब नाव न जाई' राम की मर्यादित नीतिशीलता का गूढ़ संकेत देते हैं। इसका आशय यही है कि कर्म वही करना चाहिए जो भविष्य में किसी प्रकार का कलंक, हानि

या नैतिक विचलन उत्पन्न न करे।

यह वचन राम के जीवन में हर प्रसंग पर लागू होता है वनवास का स्वीकार, जनजातीय समाज से अपनापन, शबरी और निषादराज के प्रति सम्मान, विभीषण का आश्रय, ये सभी निर्णय इसी मर्यादाबोध पर आधारित हैं।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि तुलसीदास जी ने श्रीराम को मर्यादा, शील, नीति, करुणा और मानवीय सद्‌गुणों के सर्वोच्च आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया है। तुलसी के अनुसार राम केवल एक दैवी नायक नहीं, बल्कि जनसामान्य का मार्गदर्शक, लोकहितकारी राजा, कोमल-हृदय मानव और व्यापक मानव-धर्म का मूर्त रूप है। राम का व्यवहार वन में हो या राजमहल में, मित्रों-भाइयों के साथ हो या साधारण जनजातीय लोगों के साथ—हर स्थान पर समान, विनम्र, शीलयुक्त और धर्मपरायण दिखाई देता है। वे न क्रोध से विचलित होते हैं, न शत्रुता से; बल्कि करुणा, क्षमा, नीति और लोकमत को सर्वोच्च महत्व देते हैं। तुलसीदास ने राम को इस प्रकार चित्रित किया है कि वे धर्म, नीति और प्रेम को संतुलित कर मानव जीवन का आदर्श स्वरूप बन जाते हैं। उनकी मर्यादाएँ राष्ट्र, समाज, परिवार और व्यक्तिगत जीवन—सभी के लिए अनुकरणीय हैं। इसी कारण रामचरितमानस का राम विश्व-संस्कृति में भी आदर्श मानव और लोककल्याणकारी शासक के रूप में प्रतिष्ठित होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *सं. डॉ. राम रतन प्रसाद, वाद-संवाद, साहित्य, समाज और संस्कृति की पत्रिका, त्रैमासिक अंक-16, वर्ष 2017, अक्टूबर-दिसम्बर, स्वाक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली*
2. *डॉ. भीखी प्रसाद 'वीरेन्द्र', रामकथा : कृत्तिवास और तुलसीदास, युक्ति प्रकाशन, दिल्ली, 2017*
4. *फादर कामिल बुल्के, रामकथा : उत्पत्ति और विकास, राजकमल प्रकाशन, 1950*
5. *डॉ. राजकुमार सिंह, तुलसी-साहित्य में उल्लिखित जनजातियाँ और वर्तमान परिप्रेक्ष्य, गौरव बुक्स प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2013*
6. *रामचरितमानस, 2.59.1, 2, गोस्वामी तुलसीदास, गीताप्रेस गोरखपुर, 2015*
7. *रासो, त्रैमासिक शोधपत्रिका, वर्ष-8, अंक-3 एवं 4, जून-नवम्बर (संयुक्तांक), वर्ष 2015, श्रीमती मधु शर्मा का लेख, प्रकाशक तुलसीदास, गीताप्रेस, गौरखपुर, 2015*
8. *भारतीय संस्कृति को गोस्वामी तुलसीदास का योगदान बलदेव प्रसाद मिश्र, ई पुस्तकालय डिजिटल संस्करण, 2019*
9. *महाकवि तुलसीदास और युग प्रसंग, डॉ. भागीरथ मिश्र, साहित्य भवन लिमिटेड, इलाहाबाद, 1973*
10. *गोस्वामी तुलसीदास रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, 1923*
11. *पादटिप्पणी- It (Idea of personal God) has found its highest spiritual expression in the work of Tulsidas. His hero is the worthiest figure in all Indian Literature*
12. *आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, गोस्वामी तुलसीदास, नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी, नई दिल्ली*